Class - M.ed (IInd sem)
Paper - 2nd
Sub - Culture (Unit = 3rd)

Q1 संस्कृति का अर्थ व परिभाषा दो व उसकी प्रकृति की विवेचना करो।

अथवा

संस्कृति क्या है? शिक्षा और संस्कृति में क्या संबंध है?

अथवा

संस्कृति का अर्थ व परिभाषा बताइए तथा शिक्षा संस्कृति को किस प्रकार प्रभावित करती है विवेचना कीजिए।

परिचय :- विश्व के सभी समाजों की अपनी संस्कृति होती है। भारतीय समाज में सुसंस्कृत उस व्यक्ति को कहते हैं। जो संस्कारवाद हो। ऐसा व्यक्ति तैयार करने के लिए प्राचीन भारतीय ग्रन्थों से कुछ संस्कारों का विवरण मिलता है। जिन्हें अपनाकर व्यक्ति सुसंस्कृत कहलाता था।

* रेमन्ड विलियम्स ने कहा है :- "संस्कृति सामान्य है, प्रत्येक समाज एवं प्रत्येक मस्तिष्क में होती है।"

संस्कृति समाज की आत्मा कहलाती है समाज का प्रत्येक सदस्य जाने-अनजाने में समाज की संस्कृति से जुड़ा होता है। वह अपने समस्त कार्यों एवं व्यवहारों के द्वारा अपनी संस्कृति को प्रदर्शित करता है। तथा उसे सुसंस्कृत कहा जाता है। जहाँ विश्व के सभी समाजों की अलग-अलग संस्कृतियाँ आपस में इस घुल-मिल जाएगी कि केवल एक ही स्वरूप संस्कृति का होगा जो विश्व संस्कृति कहलाएगी।

संस्कृति का अर्थ :→ संस्कृति का अर्थ भिन्न-2 अनुशासनों में अलग-2 तरीके से बताया गया है।

मानवशास्त्रीय एवं समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से संस्कृति का अर्थ स्पष्ट करने का प्रयास करेंगे। अंग्रेजी की 'कल्चर' शब्द लैटिन भाषा के 'कल्चुरा' तथा 'कोलियर' शब्द से निकला है। जिसका अर्थ उत्पादन और परिष्कार अर्थात 'उत्पादन के फलस्वरूप परिष्कार'। कोलियर शब्द का सम्बन्ध अंग्रेजी के 'कल्ट' तथा कल्टस' से भी है जिनका अर्थ है धार्मिक विश्वास, पूजा का तरीका। इस प्रकार कल्ट, कोलियर तथा वर्शिप का अर्थ हुआ गुणों का, मूल्यों का उत्पादन जो संस्कृति का अंग होते है

अतः संस्कृति शब्द से जो अर्थ ध्वनित हुआ वह यह है कि जो व्यक्ति शुद्ध तरीके से कार्य करता है वह सुसंस्कृत कहलाता है

Defination परिभाषा :→

ई. बी. टेलर :→ "संस्कृति के वह जटिल समग्रता है जिसमें ज्ञान विश्वास, कला, नैतिकता, विधि रीति-रिवाज एवं एक सदस्य के रूप में मानव द्वारा अर्जित किसी भी प्रकार

की अन्य क्षमताएँ व आदतें शामिल है।

→ "Culture is that complex whole which includes knowledge, beliefs, art, morals, law, custom and any other capacities and habits acquired by man as a member of society." E. B. Taylor.

→ * डॉ. ए. एन. व्हाइटहेड के अनुसार :- "संस्कृति विचार और सुन्दरता तथा मानवीय भावों की ग्राह्यता का क्रिया है"।

→ Dr. A.N. Whitehead :- "Culture is activity of thought and receptiveness to beauty and human feelings."

* रूसेक के अनुसार :- "मनुष्य अपनी संस्कृति बनाता है, तो वह प्रत्येक मनुष्य एक पृथक व्यक्ति के रूप में नहीं होता बल्कि एक मानव समूह के रूप में होता है।

* Reucek :- "Man makes his culture not each man as a separate human being, but man as a group".

* संस्कृति की प्रकृति (Nature) :-

समाज में किसी भी चीज को जानने से पहले उसकी संस्कृति के बारे में जानना जरूरी है। संस्कृति की प्रकृति के बारे में महत्वपूर्ण बातें निम्नहै

(1) संस्कृति सीखे हुए गुण है :-

संस्कृति जन्मजात नहीं है। समाजीकरण के द्वारा सीखे हुए गुण, आदतें तथा विचार आदि ही संस्कृति कहलाती है।

2) संस्कृति संचारशील है :-

संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को संचार होता है। इससे संस्कृति में बराबर वृद्धि होती रहती है। संचार के कारण नई पीढ़ी पिछली पीढ़ी के अनुभवों से लाभ उठाती है। संस्कृति संचारशील बनी रहती है

(3) संस्कृति व्यावैयक्तिक नहीं, बल्कि सामाजिक :-

संस्कृति वैयक्तिक न होकर सामाजिक है। उसमें समूह के सदस्यों की सामान्य अपेक्षायें शामिल होती हैं। समूह से बाहर रहकर व्यक्ति संस्कृति की सृष्टि नहीं कर सकता है।

4) संस्कृति आदर्शात्मक :-

संस्कृति में व्यवहार के वे आदर्श प्रतिमान या आदर्श नियम सम्मिलित हैं, जिनके अनुसार

समाज के सदस्य आचरण करने की चेष्टा करते है। इन आदर्श, नियमों तथा प्रतिमान को समाज स्वीकार करता

5) संस्कृति कुछ आवश्यकताओं को पूरा करती है।

संस्कृति मनुष्य की उन नैतिक तथा सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करती है जो स्वयं साध्य है। संस्कृति में सामूहिक आदर्श सम्मिलित है। संस्कृति का जो अंश सामाजिक सन्तोष में सहायक नहीं होता, वह गायब हो जाता है।

6. संस्कृति में उपयोजन की योग्यता :-

पर्यावरण के अनुसार संस्कृति बराबर बदलती रहती है और इस परिवर्तन से बाहरी शक्तियों से उसका उपयोजन होता रहता है, परन्तु विकसित होने पर प्राकृतिक पर्यावरण का प्रभाव घटता जाता है।

7. संस्कृति में एकीभूत होने का गुण :-

संस्कृति में एक क्रम और एक संगठन होता है। उसके भिन्न-2 आपस में एकीभूत रहते है और जो भी नया तत्व आता है, वह भी उनमें मिल जाता है। जिन संस्कृतियों पर बाहरी प्रभाव अधिक पड़ता है, वे अधिक विजातीय होती है, परन्तु सभी संस्कृतियों में कुछ-2 एकीभूतता की प्रवृत्ति अवश्य दिखाई दे पड़ती है।

संस्कृति की प्रकृति

- संस्कृति सीखे हुए गुण है।
- संस्कृति संचारशील है।
- संस्कृति वैयक्तिक न हो, बल्कि सामाजिक
- संस्कृति आदर्शात्मक है।
- संस्कृति कुछ आवश्यकताओं को पूरा करती है।
- संस्कृति में उपयोगिता की योग्यता होती है।
- संस्कृति में एकीभूत होने का गुण

* Education and Culture शिक्षा और संस्कृति :-

शिक्षा और संस्कृति का घनिष्ट सम्बन्ध इस तथ्य से स्पष्ट होता है कि शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य बालक को उसकी सामाजिक विरासत, उसकी संस्कृति प्रदान करना है। संस्कृति प्रत्येक पीढ़ी द्वारा नयी पीढ़ी को सौंप दी जाती है इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी संस्कृति में जन्म लेता है। संस्कृति का मनुष्य के जीवन में अत्यधिक महत्व है। इस महत्व के विवेचन से यह स्पष्ट होगा कि संस्कृति के विभिन्न अंगों की शिक्षा से मनुष्य को क्या लाभ होता है। संक्षेप में, संस्कृति के कार्य अथवा व्यक्ति को उसका योगदान निम्न है।

(1) प्राकृतिक परिवेश से समायोजन
(2) सामाजिक परिवेश से समायोजन
(3) व्यक्तित्व का विकास
(4) समाजीकरण

*(1) प्राकृतिक परिवेश से समायोजन :-
मनुष्य सब कहीं किसी न किसी प्रकार के प्राकृतिक परिवेश में रहते है और इस परिवेश से समायोजन करने के बिना उनका जीवन नहीं चल सकता। परिवेश से समायोजन करने की प्रक्रिया में वे जो नये-2 आविष्कार करते है, वे संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। भारतवर्ष में विभिन्न जनजातियों के सदस्य अपने प्राकृतिक परिवेश से समायोजित करने के लिए भिन्न-2 प्रकार से व्यवहार करते है और यह व्यवहार जनजाति द्वारा नई पीढ़ी को सिखाया जाता है।

(2) सामाजिक परिवेश से समायोजन :-
संस्कृति में रीति-रिवाज, परम्परायें और चालू व्यवहार प्रतिमान सम्मिलित होते है। उसमें हमारे विश्वास और विचार, निर्णय और मूल्य तथा सामाजिक संस्थायें निहित है। इन सबसे व्यक्ति को सामाजिक परिवेश से समायोजन करने में सहायता मिलती है।

बालक को समूह की संस्कृति की शिक्षा देने से वह समूह की परम्पराओं, रीति-रिवाजों, मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमानों से परिचित हो जाता है इससे उसे सामाजिक परिवेश में समायोजन करने में आसानी होती है और उसका समाजीकरण होता है।

(3) व्यक्तित्व का विकास :-

व्यक्तित्व मनुष्य के व्यवहार के प्रतिमानों से स्पष्ट होता है। भारतीय मनुष्य के व्यक्तित्व पर भारतीय संस्कृति की और पाश्चात्य मनुष्य के व्यक्तित्व पर पाश्चात्य संस्कृति की स्पष्ट छाप देखी जा सकती है। संस्कृति व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक, नैतिक और सौन्दर्यात्मक सभी पहलुओं को प्रभावित करती है। व्यक्तियों के प्रयासों से संस्कृति में महत्वपूर्ण परिवर्तन होते हैं, किन्तु फिर दूसरी ओर संस्कृति से ही सामान्य मनुष्यों के व्यवहार निर्धारित होते हैं।

4) सामाजीकरण :-

सामाजीकरण की प्रक्रिया में संस्कृति का महत्वपूर्ण योगदान है। व्यक्ति तीन प्रकार से संस्कृति के अंगों में भाग ले सकता है। सबसे पहले वह सार्वभौमिक रूप में संस्कृति में भाग लेता है जिन्हें समाज के सभी प्रौढ़ व्यक्तियों में पाया जाता है। दूसरे → व्यक्ति विशेष रूप से संस्कृति

के उन अंगों में भाग लेता है। जो समाज के विशिष्ट अंग विशेष व्यवस्था अथवा विशिष्ट लिंग वाले व्यक्तियों में पाए जाते है। तीसरे व्यक्ति वैकल्पिक रूप से संस्कृति के अंगों में भाग लेता है। जो समाज के कुछ ही व्यक्तियों द्वारा अपनाए गए है। संस्कृति को अपनाने में मनुष्य के अहम को तीन अवस्थाओं से गुजरना होता है जो कि वास्तव में शिक्षा की अवस्थायें कही जा सकती है। पहली अवस्था में वह खुश रहता है दूसरी अवस्था में बालक की सच्चे खेलों के प्रति हो जाती है। और संस्कृति ग्रहण करने की तीसरी अवस्था खेल है। जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार पर संयम करना सीखता है। क्रमशः वह समूह के आदर्शों, सिद्धान्तों और विश्वासों को अपनाने लगता है। इस प्रकार के व्यक्ति को ही सुसंस्कृत व्यक्ति कहा जाता है।

Cultural determinants of education.

Q. शिक्षा के सांस्कृतिक निर्धारकों का वर्णन कीजिए।

Ans संस्कृति शिक्षा के निम्नलिखित पक्षों पर प्रभाव डालती है –

1 शिक्षा के उद्देश्य :–

शिक्षा का अर्थ और उसके उद्देश्य किसी समाज या उनके विचारों, मूल्यों और प्रतिमानों पर निर्भर करते हैं। अनेक देशों में शिक्षा के उद्देश्य अपने-2 तरीकों पर आधारित हैं जैसे रूस की शिक्षा व्यवस्था का बल 'नए मनुष्यों के निर्माण पर है जो अपने खून और आत्मा से कम्युनिस्ट हों' भारत में शिक्षा का उद्देश्य समाजीकरण और प्रजातंत्रीकरण स्थापित करना है। इस प्रकार जैसी किसी देश के समाज की संस्कृति होगी, वैसे ही उसकी शिक्षा के उद्देश्य होंगे।

2 पाठ्यक्रम :–

शिक्षा के उद्देश्य पाठ्य क्रम द्वारा प्राप्त होते हैं। यह पाठ्यक्रम भी समाज की संस्कृति के अनुरूप ही निर्मित होता है। शिक्षा व्यवस्था समाज की सांस्कृतिक आवश्यकताओं को उस पाठ्यक्रम में जोड़ती है और उसे पूरा करने का प्रयास करती है।

3. शिक्षण विधियाँ :- शिक्षण विधियों का संस्कृति पर बहुत प्रभाव पड़ता है। पुराने समय में शिक्षा-प्रसार एवं शिक्षा का केन्द्र अध्यापक होता था, जो बच्चों की रुचियों और आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं होता था। लेकिन समय के बदलाव के अनुसार, आज शिक्षा का केन्द्र विद्यार्थी है। अतः आज शिक्षा विद्यार्थियों को वर्तमान एवं भविष्य में रूप के लिए तैयार करने का माध्यम है।

4. अनुशासन :- संस्कृति अनुशासन की अवधारणा को भी प्रभावित करती है। आज के युग में जीवन के लोकतंत्रीय मूल्यों को स्वीकार किया जा रहा है। अतः आज विश्व की संस्कृति को बनाए रखने के लिए प्रभावशाली अनुशासन की आवश्यकता है। इस संस्कृति द्वारा मानव एवं समाज को सुसंस्कृत बनाया जा सकता है तभी यह सम्भव है जब समाज में अनुशासन में रहे।

5. पाठ्य-पुस्तकों पर प्रभाव :- सांस्कृतिक मूल्यों का पाठ्यक्रमों पर अत्यधिक प्रभाव होता है पाठ्य-पुस्तकों को सांस्कृतिक मूल्यों पर

निरंतरता को बनाए रखता है। वह समाज की परिस्थि
का ज्ञान बालकों को देकर उनके अनुरूप उन्हें तैया
करता है और समाज को निरन्तर आगे बढ़ने में
योगदान देता है।

समाज के अनेक सांस्कृति प्रतिरूप
हैं और उनमें जटिलताएं भी हैं। इन सांस्कृति प्रतिरू
एवं जटिलताओं को विद्यालय सरल बना सकते हैं। विद्याल
निम्न प्रकार से सांस्कृति विरासत सम्बन्धी अप
उत्तरदायित्व निभाने का प्रयास करता है —

1 पाठ्यक्रम तथा सांस्कृतिक चरोहर के द्वारा।
2. पाठ्य पुस्तकें तथा सांस्कृतिक चरोहर के द्वारा।
3 पाठ्येत्तर क्रियाएं तथा सांस्कृतिक चरोहर के द्वारा।
4 समाज के सांस्कृतिक तथा कलात्मक आदि स्थानों पर
शैक्षिक भ्रमण के द्वारा।
5. अध्यापकों के निजी उदाहरण तथा सांस्कृतिक चरोहर के
द्वारा।

9 Education and Cultural change

प्र. सांस्कृति परिवर्तन से आप क्या समझते हैं? सांस्कृति परिवर्तन तथा सामाजिक परिवर्तन में क्या अंतर है? सांस्कृतिक परिवर्तन में शिक्षा की क्या भूमिका है?

उत्तर. सांस्कृति परिवर्तन :-

सांस्कृतिक तत्व - कला, ज्ञान, विज्ञान, आवागमन के साधन, भाषा, विश्वास, रीति-रिवाज, फैशन, प्रथाओं आदि में होने वाला परिवर्तन सांस्कृति परिवर्तन कहलाता है।

संस्कृति परिवर्तन शील है। संस्कृति के प्रत्येक अंग में परिवर्तन होता रहता है, किसी में तीव्रता से तथा किसी में मंद गति से। बाह्य प्रभाव भी बिना सोचे-समझे ग्रहण नहीं किए जाते किसी में विरोध कम होता है, किसी में अधिक। इसमें संदेह नहीं कि आविष्कार तथा प्रसार द्वारा संस्कृतियों का रूप बदलता रहता है। अन्य संस्कृतियों के तत्व कई कारणों से ग्रहण किए जाते हैं। कुछ तो दबाव के कारण अपनाए जाते हैं, कुछ नवीनता के लिए कुछ सुविधा के लिए तथा कुछ फैशन के लिए। कुछ नवीन तत्व प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए अपनाए जाते हैं। संस्कृति परिवर्तन से सामाजिक परिवर्तन प्रभावित होता है।

सांस्कृति तथा सामाजिक परिवर्तन में अन्तर :-
सामाजिक परिवर्तन तथा सांस्कृतिक परिवर्तन में अन्तर स्पष्ट करने के लि विभिन्न विद्वानों ने अपने-2 विचार प्रकट किए

1 पारसन्स के अनुसार :- "सांस्कृतिक परिवर्तन का संबंध केव मूल्यों, विचारों तथा प्रतिकात्मक अर्थपूर्ण व्यवस्थाओं में परिवर्तन से है जबकि सामाजिक परिवर्तन का संबंध व्या तथा समाज के बीच होने वाले अन्तः-क्रियाओं में परिवर्त से है।"

2. लियोपोल्ड वान वीज के अनुसार :- "सामाजिक परिवर्तन व्यक्ति व्यक्ति के बीच के संबंधों में होने वाले परिवर्तनों क बताया है, जबकि सांस्कृति परिवर्तन व्यक्ति तथा पदार्थ के संबंधों में होने वाले परिवर्तनों की ओर संकेत करता है, जबकि समाज का संबंध उन वस्तुए के उत्पादकों से होता है।"

सामाजिक परिवर्तन	सांस्कृति परिवर्तन
1 सामाजिक संबंधों में होने वाला परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन कहलाता है।	1 सांस्कृति तत्व-कला, ज्ञान, विज्ञान, आवागमन के साधन, भाषा, प्रथाओं आदि में होने वाला परिवर्तन सांस्कृति परिवर्तन है।
2 सामाजिक परिवर्तन तेज गति से होने वाला परिवर्तन है।	2 सांस्कृति परिवर्तन मन्द गति से होने वाला परिवर्तन है।
3 सामाजिक परिवर्तन को सांस्कृतिक परिवर्तन का केवल एक भाग मानते हैं।	3 सांस्कृति एक व्यापक अवधारणा है, इसके अन्दर अन्य सभी परिवर्तनों को सम्मिलित किया जाता है।
4 सामाजिक परिवर्तन सामाजिक संगठन या संरचना और प्रकार्यों में होने वाला परिवर्तन होता है।	4 सांस्कृतिक परिवर्तन से सांस्कृति प्रसार होता है और नये-नये आविष्कार किये जाते हैं। इन आविष्कारों के कारण परिवर्तन होता है।
5 सामाजिक परिवर्तन के द्वारा सांस्कृतिक परिवर्तन को प्रभावित किया जाता है।	5 सांस्कृति परिवर्तन सामाजिक परिवर्तन को प्रभावित तो करता है परन्तु इसकी कोई निश्चितता नहीं होती।

6 सामाजिक परिवर्तन एक सीमित अवधारणा होने के कारण इसका क्षेत्र भी संकुचित होता है।	6 सांस्कृतिक परिवर्तन एक व्यापक अवधारणा होने के कारण इसका क्षेत्र भी अधिक व्यापक होता है।
7 सामाजिक परिवर्तन का समाज पर प्रभाव अपेक्षाकृत कम स्थायी होता है।	7 सांस्कृतिक परिवर्तन का समाज पर प्रभाव अधिक स्थायी होता है।
8 सामाजिक परिवर्तन का संबंध वर्तमान की प्रक्रियाओं से होता है।	8 सांस्कृतिक परिवर्तन अधिकतर भूतकाल की प्रक्रियाओं को प्रभावित करता है।

सांस्कृतिक- परिवर्तनों का शिक्षा पर प्रभाव :-

शिक्षा सांस्कृतिक परिवर्तन का बड़ा ही सशक्त कारण है और शिक्षा के द्वारा बड़ी सरलता तथा प्रभावपूर्ण ढंग से सांस्कृतिक परिवर्तन लाये जा सकते हैं, किन्तु विख्यात समाजशास्त्री ऑगबर्न का मत है कि शिक्षा, सांस्कृतिक परिवर्तनों के पीछे पीछे चलती है। हम देखते हैं कि शिक्षा सदैव सांस्कृतिक परिवर्तनों के पीछे-पीछे चलती है, किन्तु साथ-ही ही साथ सांस्कृतिक परिवर्तनों को गति तथा

दिशा भी प्रदान करती चलती है। सांस्कृतिक परिवर्तन के कारण समाज का स्वरूप बदलता है, समाज की संरचना बदलने से समाज की आवश्यकताएं बदलती हैं। इन बदली हुई आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समाज शिक्षा में भी उपयुक्त परिवर्तन करता है, क्योंकि शिक्षा समाज के एक प्रतिनिधि के रूप में कार्य करती है। समाज शिक्षा की व्यवस्था इसलिए करता है जिससे कि उसकी संस्कृति का हस्तान्तरण व परिमार्जन होता रहे। समाज परिवर्तित होकर नई संस्कृति को जन्म देता है और शिक्षा से आशा करता है कि वह इस संस्कृति का नई पीढ़ी को हस्तान्तरण करेगी। इसलिए पहले समाज में परिवर्तन होते हैं फिर समाज उन परिवर्तनों के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा में परिवर्तन करता है।

कभी-कभी कुछ सामाजिक शक्तियाँ जैसे समाज की आकांक्षाएं, समाज के नैतिक मूल्य आदि भी शिक्षा में परिवर्तन ले आते हैं। सामाजिक परिवर्तनों के कारण समाज की आकांक्षाएं बदल जाती हैं। इस प्रकार समाज शिक्षा परिवर्तन कर अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति करने की चेष्टा करता है।

ग्राम और शहर की संस्कृतियों में समन्वय शिक्षा द्वारा होना चाहिए। गाँव वाले शहर के लोगों की बहुत सी बातें नहीं मानते। इसका कारण है कि बताने वालों की संस्कृति मानने वालों की संस्कृति से भिन्न होना। संस्कृति की यह भिन्नता नवीन विचारों को मानने नहीं देती और ग्राम तथा शहर की संस्कृतियों में आदान-प्रदान नहीं हो पाता। अतएव किसी नई बात का प्रचार और प्रसार उसी ग्रुप के लोगों द्वारा होना चाहिए

शिक्षा का मुख्य कार्य किसी प्रविधि से होने वाले लाभों को स्पष्ट करना है जब समुदाय के लोग यह जान जाते हैं कि नवीन प्रविधि से होने वाला लाभ क्या है तथा उससे कितनों को लाभ होगा तब वे समीकरण चाहने लगते हैं। यदि उचित शिक्षा का प्रबन्ध नहीं है तो अच्छे से अच्छा विचार पीछे रह जाता है और उसका प्रचार ठीक से नहीं हो पाता। इसीलिये कल्याण के लिए शिक्षा का प्रबंध होना आवश्यक है।